RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2025-27
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

गौतम बुद्ध

बाबा साहेब डा0 अम्बेडकर

अगस्त-2025 | वर्ष - 17 | अंक : 07 | मूल्य : 5/-

संत कबीर दास | संत रविदास जी | घासीदास | बिरसामुण्डा | पेरियार रामास्वामी | छत्रपति शाहूजी महाराज | सन्त गाडगे | महात्मा ज्योतिबा राव फुले | नारायण गुरु | सावित्री बाई फुले | कांशीराम

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.),
मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल)
मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख -
रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-बहादुरगढ़,जिला-झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामटौरिया, जिला-छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई दिल्ली-44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान न.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला-अलवर-301001,
मो. : 09887512360, 0144-3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -
भारतीय स्टेट बैंक
पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.-33496621020
IFSC CODE-SBIN0001784

अछूतों का महत्व

संसार के अधिकांश देशों में ऐसे वर्ग हैं, जो निम्न वर्ग कहे जाते हैं। ये रोम में स्लेव या दास कहलाते थे। स्पार्टन में इनका नाम हेलोटस या क्रीत था। ब्रिटेन में ये विलियन्स या क्षुद्र कहलाते थे, अमरीका में नीग्रो और जर्मनी में ये यहूदी थे। हिंदुओं में यही दशा अछूतों की थी, परंतु इनमें से कोई इतना बदनसीब न था, जितना अभागा अछूत है। दास, क्रीत क्षुद्र सभी लुप्त हो गए हैं। परंतु छुआछूत का भूत आज भी मौजूद है और यह तब तक मौजूद रहेगा जब तक हिंदू धर्म का अस्तित्व है। अछूत यहूदियों से भी गया-बीता है। यहूदियों की दुर्दशा उनकी अपनी करनी के कारण है। अछूतों दुर्गति के कारण नितांत भिन्न है। यह निर्मम हिंदुओं की साजिश के शिकार हैं, जो उनकी दुर्दशा के लिए बर्बर तत्वों से कम नहीं हैं। यहूदी तिरस्कृत है, परंतु उनकी तरक्की के रास्ते बंद नहीं कर दिए गए हैं। अछूत केवल तिरस्कृत ही नहीं हैं, बल्कि उनकी तरक्की के सभी दरवाजे बंद हैं। फिर भी अछूतों की तरफ किसी का ध्यान नहीं गया 6 करोड़ प्राणियों की अनदेखी हो रही है।

भारत में आजादी का जो कोलाहल मचा है, उसमें यदि कोई हेतु है तो वह है अछूतों का हेतु। हिंदुओं और मुसलमानों की लालसा स्वाधीनता की आकांक्षा नहीं है। यह तो सत्ता संघर्ष है, जिसे स्वतंत्रता बताया जा रहा है। इसी कारण मुझे इस बात पर आश्चर्य है कि किसी दल अथवा किसी संगठन ने अपने आप को अछूतों के प्रति समर्पित नहीं किया। अमरीका साप्ताहिक ''द नेशन'' और इंगलैंड के साप्ताहिक ''स्टेट्समैन'' प्रभावशाली अखबार है। दोनों ही भारतीय स्वतंत्रता के पक्षधर हैं और ये भारत की स्वतंत्रता का दम भरते हैं। जहां तक मैं जानता हूं, किसी ने भी अछूतों की समस्याओं को नहीं उठाया है। दरअसल उनकी स्थिति को कोई स्वतंत्रता प्रेमी प्रकट नहीं सकता। उन्होंने मात्र हिंदू संस्था को ही मान्यता दी है, जो स्वयं को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कहती है। अन्य हिंदू और कोई अन्य यह नहीं जानता कि वास्तव में अछूत क्या है। भारत में हिंदुओं के सिवाय सब जानते हैं कि नाम कुछ भी क्यों न रख लिया गया हो, यह संदेहातीत है कि यह मध्यवर्गीय हिंदुओं की संस्था है, जिसको हिंदु पूंजीपतियों का समर्थन प्राप्त है, जिसका लक्ष्य भारतीयों की स्वतंत्रता नहीं, बल्कि ब्रिटेन के नियंत्रण से मुक्त होना और वह सत्ता प्राप्त कर लेना है, जो इस समय अंग्रेजों की मुट्ठी में है। कांग्रेस जैसी आजादी चाहती है, यदि उसे वह मिल जाती है, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि अछूतों का ठीक वही हाल होगा जो अतीत में होता रहा है। अछूतों के प्रति इस अवहेलना के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की भारतीय शाखा बधाई की पात्र है जिसने प्रशांत संबंध संस्थान में मेरा प्रबंध लेख आमंत्रित किया कि मैं इस विषय पर प्रकाश डाल सकूं कि भारत के नए संविधान में अछूतों की स्थिति क्या होगी। मैं स्वीकार करता हूं कि भारत के नए संविधान में अछूतों की स्थिति पर मेरे वक्तव्य का निमंत्रण एक सुखद आश्चर्य है। मुझे इस बात से बहुत प्रसन्नता हुई है कि बहुत से काम हाथ में होने के पश्चात भी मैं यह प्रबंध लिखने के लिए सहमति दे सका हूं।

पूंजीपतियों का समर्थन प्राप्त है, जिसका लक्ष्य भारतीयों की स्वतंत्रता नहीं, बल्कि ब्रिटेन के नियंत्रण से मुक्त होना और वह सत्ता प्राप्त कर लेना है, जो इस समय अंग्रेजों की मुट्ठी में है। कांग्रेस जैसी आजादी चाहती है, यदि उसे वह मिल जाती है, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि अछूतों का ठीक वही हाल होगा जो अतीत में होता रहा है। अछूतों के प्रति इस अवहेलना के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की भारतीय शाखा बधाई की पात्र है जिसने प्रशांत संबंध संस्थान में मेरा प्रबंध लेख आमंत्रित किया कि मैं इस विषय पर प्रकाश डाल सकूं कि भारत के नए संविधान में अछूतों की स्थिति क्या होगी। मैं स्वीकार करता हूं कि भारत के नए संविधान में अछूतों की स्थिति पर मेरे वक्तव्य का निमंत्रण एक सुखद आश्चर्य है। मुझे इस बात से बहुत प्रसन्नता हुई है कि बहुत से काम हाथ में होने के पश्चात भी मैं यह प्रबंध लिखने के लिए सहमति दे सका हूं।

साभार - बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर
सम्पूर्ण वाङ्मय खण्ड-17, पृष्ठ सं. 3 से 4
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

जीवन का रहस्य

नील डोनाल्ड वैल्श

लेखक, अंतर्राष्ट्रीय वक्ता और आध्यात्मिक संदेशवाहक

आसमान में ऐसा कोई ब्लैकबोर्ड नहीं है, जिस पर ईश्वर ने आपके जीवन का उद्देश्य या मिशन लिखा हो। आसमान में ऐसा कोई ब्लैकबोर्ड नहीं है, जिस पर लिखा हो, ''नील डोनाल्ड वैल्श। आकर्षक युवक, जो इक्कीसवीं सदी के पहले हिस्से में रहता था, जो...'' और फिर वहाँ खाली जगह है। मुझे सचमुच समझना है कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ, मैं यहाँ क्यों आया हूँ, मुझे उस ब्लैकबोर्ड को खोजना और पता लगाना है कि ईश्वर के मन में मेरे लिए दरअसल क्या है। लेकिन ब्लैकबोर्ड मौजूद ही नहीं है।

आपका उद्देश्य वही है, जो आप मानते हैं। आपका उद्देश्य वही है जो आप खुद को देते हैं। आपका जीवन वैसा ही होगा, जैसा आप इसे बनाएँगे और कोई भी इसका मूल्यांकन करने के लिए कभी खड़ा नहीं होगा।

आपके पास अपने जीवन के ब्लैकबोर्ड को अपनी मनचाही चीजों से भरने का अवसर होता है। अगर आपने इसमें पहले कचरा भर दिया हो, तो उसे साफ कर दें। अतीत की हर उस चीज को मिटा दें, जो आपका भला नहीं करती है और कृतज्ञ बनें कि वह आपको इस जगह तक और एक नई शुरुआत तक ले आई है। आपके पास एक साफ स्लेट है और आप अब दोबारा शुरू कर सकते हैं– यहीं पर, इसी समय। अपनी खुशी खोजें और उसे जिएँ।

जैक कैनफील्ड

यह सबक समझने में मुझे कई साल लग गए, क्योंकि मैं बहुत हद तक इस विचार के साथ बड़ा हुआ था कि मुझे कोई काम करना चाहिए और अगर मैं उसे नहीं कर रहा हूँ, तो ईश्वर मुझसे खुश नहीं होंगे।

जब मैं सचमुच समझ गया कि मेरा पहला लक्ष्य खुशी महसूस करना है, तो मैं सिर्फ वही काम करने लगा, जिनसे मुझे खुशी मिलती थी। मेरा प्रिय वाक्य है : ''अगर इसमें मजा नहीं आता है, तो इसे मत करो।''

नील डोनाल्ड वैल्श

खुशी, प्रेम, स्वतंत्रता, आनंद, हँसी। यही तो असली बात है। अगर आपको एक घंटे तक बैठकर साधना करने में आनंद मिलता है, तो वैसा करें। अगर आपको सैंडविच खाने में आनंद मिलता है, तो वैसा करें।

जैक कैनफील्ड

अपनी बिल्ली को थपथपाते समय मैं आनंद की अवस्था में होता हूँ। प्राकृतिक परिवेश में पैदल चलते समय मैं आनंद की अवस्था में होता हूँ। इसलिए मैं खुद को लगातार उस अवस्था में रखना चाहता हूँ। ऐसा करने के लिए मुझे बस अपनी मनचाही चीज़ का इरादा रखना होता है। इसके बाद मेरी मनचाही चीज अपने आप प्रकट हो जाती है। वही काम करें, जो आपको पसंद हों। उनसे ही आपको खुशी मिलेगी। अगर आप यह नहीं जानते हैं कि आपको किस चीज से खुशी मिलेगी, तो खुद से पूछें, ''मेरी खुशी क्या है?'' जब आप इसका पता लगा लेते हैं और खुशी के प्रति समर्पित हो जाते हैं, तो आकर्षण का नियम अपने में खुशनुमा चीजों, लोगों, परिस्थितियों, घटनाओं और अवसरों की बाढ़ ला देगा, क्योंकि आप खुशी का संचार कर रहे हैं।

डॉ. जॉन हेजलिन

आंतरिक खुशी अक्सर सफलता का ईंधन होती है।

इसी समय खुश बनें। इसी समय अच्छा महसूस करें। आपको बस यही इकलौता काम करना है। अगर इस पुस्तक से आप यही इकलौती चीज सीखते हैं, तो आपने रहस्य के सबसे महान अंश को जान लिया है।

डॉ. जॉन ग्रे

जो भी चीज़ आपको अच्छा महसूस कराती है, वह हमेशा और ज्यादा अच्छाई लाएगी।

आप इस वक्त यह पुस्तक पढ़ रहे हैं। आपने इसे अपने जीवन की ओर आकर्षित किया है। अब यह आपका चुनाव है कि आप इसका इस्तेमाल करना चाहते हैं या नहीं। अगर आपको अच्छा महसूस हो रहा हो, तो ऐसा कर दें। अगर अच्छा महसूस नहीं हो रहा हो, तो रहने दें। कोई ऐसी चीज खोजें, जिससे आपको अच्छा महसूस हो, जो आपके दिल के तार झनझना दें।

रहस्य का ज्ञान आपको मिल चुका है। इसके साथ क्या करना है, यह पूरी तरह से आपके हाथ में है। आप अपने लिए जो भी चुनें, वह सही हैं। आप इसका इस्तेमाल करने का चुनाव करते हैं या नहीं, यह चुनना भी आप पर है। चुनाव की स्वतंत्रता आपकी है।

''अपने आनंद का अनुसरण करें और ब्रह्मांड आपके लिए वहाँ भी दरवाजे खोल देगा, जहाँ कभी सिर्फ दीवारें थीं।

जोसेफ कैंपबेल

लीसा निकोल्स

जब आप अपने आनंद का अनुसरण करते हैं, तो आप निरंतर आनंद के माहौल में रहते हैं। आप ब्रह्मांड की प्रचुरता के लिए अपने द्वार खोल देते हैं। आप अपने प्रियजनों के साथ नियामतें बाँटने के लिए रोमांचित हो जाते हैं। आपका रोमांच, आपका जोश, आपका आनंद संक्रामक बन जाता है।

डॉ. जो विटाल

मैं लगभग हमेशा से यही कर रहा हूँ – अपने रोमांच, अपने जोश, अपने उत्साह का अनुसरण कर रहा हूँ – और मैं यह काम दिन भर करता हूँ।

बॉब प्रॉक्टर

जीवन का आनंद लें, क्योंकि जीवन अद्भुत है। यह जीवनयात्रा शानदार है।

मैरी डायमंड

आप एक अलग वास्तविकता, एक अलग जीवन में जिएँगे। और लोग आपकी ओर देखकर कहेंगे, ''आप मुझसे अलग क्या करते हैं? देखिए, इकलौता फर्क यह है कि आप रहस्य के ज्ञान के साथ काम करते हैं।

मॉरिस गुडमैन

फिर आप वह कर सकते है, बन सकते हैं और पा सकते हैं, जिसके बारे में लोग कभी कहा करते थे कि यह होना असंभव है।

डॉ. फ्रेड एलन वोल्फ

सच तो यह है कि हम अब एक नए युग में कदम रख रहे हैं। यह वह युग है, जहाँ आखिरी सीमा अंतरिक्ष नहीं है, जैसा ''स्टार ट्रैक'' में कहा गया है, यह तो मस्तिष्क है।

डॉ. जॉन हेजलिन

मैं असीमित क्षमता, असीमित संभावनाओं का भविष्य देखता हूँ। याद रखें, हम मस्तिष्क ही ज्यादा से ज्यादा 5 प्रतिशत क्षमता का प्रयोग कर रहे हैं। शत–प्रतिशत मानवीय क्षमता सही शिक्षा का परिणाम है। इसलिए एक ऐसे विश्व की कल्पना करें, जहाँ लोग अपनी पूरी मानसिक और भावनात्मक क्षमता का इस्तेमाल कर रहे हों। हम कहीं भी जा सकते हैं। कुछ भी कर सकते हैं। कुछ भी पा सकते हैं।

इस सुंदर ग्रह पर हमारा समय इतिहास का सबसे रोमांचक काल है। मानवीय प्रयास के हर क्षेत्र और विषय में हम असंभव को संभव बनते देख रहे हैं और अनुभव कर रहे हैं। जब हम सीमा के सभी विचारों को बाहर निकाल देते हैं और यह जान लेते हैं कि हम असीमित हैं, तो हम मानवता की असीम भव्यता का अनुभव करेंगे, जो खेल, सेहत, कला, प्रौद्योगिकी, विज्ञान और रचनात्मकता के हर क्षेत्र में व्यक्त होगी।

अपनी भव्यता को गले लगाएँ

बॉब प्रॉक्टर

खुद को अपनी मनचाही चीज के साथ देखें। हर धार्मिक ग्रंथ, हर महान दार्शनिक पुस्तक, हर महान लीडर, इतिहास का हर अवतार हमें यही बात बताता है। अतीत के बुद्धिमान लोगों का अध्ययन करें। उनमें से कइयों की बातें इस पुस्तक में आपको बताई गई हैं। वे सभी एक बात जानते थे ओर वह है रहस्य। अब आप भी रहस्य जान चुके हैं। और आप इसका जितना ज्यादा इस्तेमाल करेंगे, उतना ही ज्यादा समझते जाएँगे।

रहस्य आपके भीतर है। आप अपने भीतर इसकी शक्ति का जितना ज्यादा प्रयोग करेंगे, इसे अपनी ओर उतना ही ज्यादा खीचेंगे। एक समय आएगा, जब आप उस बिंदु पर पहुँच जाएँगे जहाँ आपको अभ्यास करने की जरूरत ही नहीं होगी, क्योंकि आप शक्ति बन जाएँगे, आदर्श बन जाएँगे, बुद्धि बन जाएँगे, प्रज्ञा बन जाएँगे, प्रेम और आनंद बन जाएँगे।

लीसा निकोल्स

आप अपने जीवन में इस मोड़ तक आ चुके हैं, सिर्फ इसलिए क्योंकि आपके भीतर कोई चीज कहती रही, ''आपको खुशी पाने का हक है।'' आप दुनिया को कुछ देने, इसके महत्व को बढ़ाने के लिए पैदा हुए हैं। आप कल जो थे, उससे ज्यादा बड़े और बेहतर बनने के लिए यहाँ पर हैं।

हर पुरानी घटना, हर पुराना पल आपको इस वर्तमान पल के लिए तैयार कर रहा था। कल्पना करें कि आपके पास अब जो ज्ञान आ चुका है, उससे आप आगे क्या कर सकते हैं। अब आप जान चुके हैं कि आप खुद अपनी तकदीर बनाते हैं। तो आप कितना कुछ कर सकते हैं? आप कितना कुछ बन सकते हैं? आप सिर्फ अपने अस्तित्व से कितने सारे लोगों को आशीष दे सकते हैं? आप इस पल के साथ क्या करेंगे? आप इस पल को कैसे जकड़ेंगे? कोई दूसरा आपके डांस पर डांस नहीं कर सकता, कोई दूसरा आपका गाना नहीं गा सकता, कोई दूसरा आपकी कहानी नहीं लिख सकता। आप चाहे जो हों, आप चाहे जो करते हों, आपका असली समय शुरू होता है अब!

माइकल बर्नार्ड बेकविथ

मैं यकीन करता हूँ कि आप महान हैं, कि आपमें कोई शानदार गुण है, भले ही आपकी जिंदगी में अब तक जो भी हुआ हो, भले ही आप खुद को कितना भी जवान या बूढ़ा समझते हों। जिस पल आप ''सही तरीके से सोचना'' शुरू करेंगे, दुनिया से भी ज्यादा बड़ी आंतरिक शक्ति आपके भीतर प्रकट होने लगेगी। यह आपके जीवन पर छा जाएगी। यह आपको भोजन देगी। यह आपको वस्त्र देगी। यह आपको मार्गदर्शन देगी, संरक्षण देगी, दिशा दिखाएगी, आपके अस्तित्व को पोषण देगी। बशर्ते आप इसे ऐसा करने दें। पक्की गारंटी है।

यह धरती अपनी धुरी पर आपके लिए घूमती है। समुद्र में ज्वार–भाटा आपके लिए आता है। पक्षी आपके लिए गाते हैं। सूर्य आपके लिए उगता और अस्त होता है। सितारे आपके लिए जगमगाते हैं। हर सुंदर चीज जो आप देखते है, हर अद्भुत चीज जिसका आप अनुभव करते हैं, यहाँ पर आपके लिए है। चारों तरफ नजर डालें। आपके बिना किसी चीज़ का कोई अस्तित्व नहीं है। चाहे आपने अपने बारे में पहले जो भी सोचा हो, अब आप हकीकत जान चुके हैं, कि आप सचमुच कौन हैं। आप ब्रह्मांड के मालिक हैं। आप साम्राज्य के वारिस हैं। आप जीवन की पूर्णता हैं। और अब आप रहस्य जान चुके हैं।

हमेशा खुश रहें।

''यह रहस्य उन सभी चीजों का जवाब है, जो थीं, हैं और हमेशा रहेंगी।''

रैल्फ वाल्डो इमर्सन

साभार :
रहस्य
पेज संख्या 177 से 183 तक
रॉन्डा बर्न

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

अध्याय 2 हिंदू समाज–व्यवस्था : इसके मूलभूत सिद्धांत

I

हिंदू समाज–व्यवस्था की क्या विशिष्टता है? क्या यह एक स्वतंत्र समाज है? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए यह समझना आवश्यक है कि स्वतंत्र समाज–व्यवस्था कैसी होती है। सौभाग्य से इस मामले पर बहुत अधिक विवाद नहीं है। फ्रांस की क्रांति से लेकर आज तब स्वतंत्र सामाजिक व्यवस्था के आवश्यक लक्षणों के बारे में कोई मतभेद नहीं है। ये आवश्यक तत्व कई हो सकते है, लेकिन इसमें दो तत्व तो अनिवार्य है। पहली अनिवार्यता यह है कि समष्टि में व्यष्टि का समावेश होता है और समाज का लक्ष्य उस व्याप्टि को बढ़ाना तथा उसके व्यक्तित्व का विकास करना बन जाता है। समाज व्यक्ति के ऊपर नहीं होता और यदि व्यक्ति स्वयं को समाज के अधीन मानता है, तो उसका कारण यह है कि उसे समाज की अधीनता में अपनी बेहतरी का आभास होता है। यह कारण यह है कि उसे समाज की अधीनता में अपनी बेहतरी का आभास होता है। यह अधीनता केवल उस समय तक रहती है, जब तब उसकी आवश्यकता महसूस की जाए।

दूसरी अनिवार्यता यह है किस समाज के सदस्यों के बीच सामाजिक धरातल पर स्वतंत्रता, समानता तथा भाईचारे को महत्व दिया जाना चाहिए।

किसी समाज की स्वतंत्र व्यवस्था के लिए ये दो तत्व अनिवार्य क्यों हैं? समस्त सामाजिक उद्देश्यों के संदर्भ में व्यष्टि को साध्य क्यों माना जाना चाहिए, यह साधन क्यों नहीं हो सकता? इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इस बात को समझना आवश्यक है कि जब हम मानव के विषय में बात करते हैं तो इसका तात्पर्य क्या है? हमें मानव अधिकारों की रक्षा के लिए अपने अमूल्य संसाधनों तथा अनेक जिंदगियों का बलिदान क्यों करना चाहिए? इस प्रश्न का सबसे बेहतर जवाब प्रोफेसर जैक्स मैरिटेन देते हैं। प्रोफेसर मैरिटेन 'दि कांक्वेस्ट ऑफ फ्रीडम' नामक अपने निबंध में लिखते है।

''जब हम मानव के विषय में बात करते हैं, तो हमारा तात्पर्य मात्र यही नहीं होता है कि कोई व्यक्ति एक व्यष्टि अर्थात समाज की इकाई है। ठीक वैसे ही, जैसे एक अणु, घास का तिनका, एक मक्खी या एक हाथी अलग–अलग इकाइंया है, व्यक्ति भी एक इकाई होता है जो अपनी बुद्धि और इच्छा–शक्ति से स्वयं के अस्तित्व को बनाए रखता है। केवल उसका शारीरिक अस्तित्व ही नहीं होता, बल्कि उसके पास ज्ञान और प्रेम जैसे उच्च आध्यात्मिक भाव भी होते हैं जिससे वह कुछ मायानों में स्वंय में एक ब्रह्मांड है। वह एक ऐसा प्राणी है, जिसमें ज्ञान के माध्यम से उसकी संपूर्णता के साथ एक विशाल बह्मांड को समेटा जा सकता है। प्रेम–भाव द्वारा वह अन्य प्राणियों से अपने को जोड़ सकता है। ऐसे संबंधों का साक्ष्य भौतिक संसार में अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकता। यह विशिष्टताएं मानव से संपन्न हैं जो उसे क्रियाशील रखती हैं, जो उसमें जीवंत रहती है। आत्मा अजर और अमर है अर्थात समय और मृत्यु से परे है। आत्मा व्यक्तित्व का मूल है। इस प्रकार व्यक्तित्व के अंतर्बोध में संपूर्णता तथा स्वतंत्रता का महत्वपूर्ण स्थान है। भले ही कोई व्यक्ति कितना ही दीन–हीन क्यों न हो है तो वह समाज की एक इकाई ही। और एक व्यक्ति के रूप में उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति एक प्राणी है और एक संपूर्ण तत्व की समग्रता से अधिक उसकी स्वतंत्र सत्ता अधिक महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ यह है कि वह संपूर्ण तत्व का एक सूक्ष्म कण है, जो एक ब्रह्मांड है। संपूर्ण मानव जाति में भिखारी भी एक इकाई है। वह हाड़–मांस का पुतला होता है, जिसका कि साक्षात एक मूल्य तथा महत्व होता है किंतु वह असहाय होता है। वैसे वह स्वर्ग का प्रहरी है। यह एक आध्यात्मिक रहस्य है, जिसका धार्मिक सिद्धांतो में स्वस्थ उल्लेख है, और इसीलिए कहा जाता है कि मानव ईश्वर की प्रतिमूर्ति है। मनुष्य का मूल्य, उसकी गरिमा तथा अधिकार उन नैसर्गिक पवित्र वस्तुओं से संबंध रखते हैं, जिसमें परमपिता परमेश्वर की छाप होती है और जो उसके भीतर उनके लक्ष्यों को निर्धारित करती है।''

समानता क्यों परमावश्यक हैं? इस विषय का सबसे अच्छा वर्णन प्रो० बियर्ड ने पने निबंध 'फ्रीडम इन पालिटिकल थाट'–में किया है और उनको उद्धत करने के अलावा मैं और कुछ नहीं करूंगा। प्रो० बियर्ड के अनुसार :

''समानता एक निरर्थक शब्द है, किंतु इसका कोई विकल्प भी नहीं है। समानता का अर्थ है, 'ठीक वैसा ही अर्थात माप, तोल, गुण, धर्म और कर्म में समान।' यह एक ऐसा शब्द है जो भौतिक–शास्त्र तथा गणित में तो चल सकता है, लेकिन मानव के साथ उपयोग में लाने पर सटीक अर्थ नहीं देता। जिन विद्वानों ने इस विषय का सूक्ष्मता से अध्ययन किया है, उनका विचार है कि मानव–समाज में मोटे तौर से तो मूल प्रवृत्तियाँ एक जैसी होती है, किंतु जब इन प्रवृत्तियों का विस्तार होता है, तब उनमें पूरी तरह भिन्नता दृष्टिगोचर होने लगती है। उस समय उनकी सार्वभौमिकता विलीन हो जाती है। क्या इन लक्षणों को मौलिक गुण, जैविक आवश्यकताएँ अथवा अवशिष्ट कहा जाए या कोई अन्य छोटा–मोटा नाम दिया जाए। कोई भी इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि उनका अस्तित्व होता है शारीरिक शक्ति, कला–कौशल, भौतिक संपत्ति या मानसिक क्षमता में असमानताएं स्वभाविक हैं। लेकिन इस विषय पर बल देने की आवश्यकता है। अंत में यह तथ्य सामने आता है कि मूलभूत लक्षण सभी मानवों में विद्यमान होते हैं। उनकी प्रकृति तथा अभिव्यक्तियों को 'नैतिक समानता' कहा जा सकता है।

'आचार' शब्द पर जोर दिया जाना चाहिए। सृष्टि के आरंभ से ही आलोचकों में यह परंपरा रही है कि वे शारीरिक शक्ति, प्रतिभा तथा संपत्ति के मामले में यह तत्व अनावश्यक भी है तथा अप्रासंगिक भी। नैतिक समपनता के किसी पक्षधर ने मानव–मात्र के बीच विद्यमान स्पष्ट असमानताओं को उजागर किया हो, जिनके कारण अत्याचार या संस्थागत भोगाधिकार प्रकट होते हैं। स्वतंत्रता की घोषणा यह सुनिश्चित नहीं करती कि सभी मनुष्य समान है, बल्कि यह उद्घघाटित करती है कि वे समान पैदा होते हैं।

संक्षेप में, जब 'नैतिक समानता' कहते हैं तो इसका अर्थ है आचार–विचार की समानता। यह एक विश्वास है, अधिकारों की ऐसी मान्यता है, जिसका आदर किया जाना चाहिए। इसको वैसे तो प्रमाणित नहीं किया जा सकता, जैसे गणित के प्रश्न हल कर दिए जाते हैं। इसे शारीरिक शक्ति, प्रतिभा, उद्योग तथा संपत्ति संबंधी असमानताओं के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। यह इस बात का निषेध करती है कि मात्र शारीरिक रूप से बलिष्ठता के आधार पर कोई निर्बलों को मारे, खाए या सताए। इसी प्रकार नैतिक समानता के अनुसार प्रतिभा तथा संपत्ति के मामले में भी कोई छूट नहीं दी जा सकती। ऐसी स्थिति में तो कोई भी बल, बुद्धि तथा संपदा में अपने को श्रेष्ठता के पलड़े में भारी मान सकता है। ऐसी परिस्थितियों में सरकार तथा संपत्ति बलवानों के पास चली जाएगी, जब कि गुण तथा प्रतिभा अत्याचारियों के आगे हाथ बांधे खड़े रहेंगे, ठीक वैसे ही जैसे यूनान के दास रोम के विजताओं की सनकों तथा इच्छाओं को पूरा किया करते थे। अब यूनान के दास रोम के विजताओं की सनकों तथा इच्छाओं को पूरा किया करते थे। अब यूनान के दास रोम के विजेताओं की सनकों तथा इच्छाओं को पूरा किया करते थे। अब जब कि नैतिक समानता की सिद्धांत की कटु आलोचना की जा चुकी है, इसमें ऐसा कुछ है जिसे स्वीकार किया जाना चाहिए और उसका अनुसरण किया जाना चाहिए, भले ही इसके प्रति विरोध क्यों न हो। मानव व्यक्तित्वों के प्रति बिना किसी अंदर वाला समाज डाकुओं का समूह होता है।''

भाई चारे की भावना क्यों अनिवार्य है? भाई चारा मानव के उस गुण का नाम है जिसके अनुसार वह समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ प्यार–सम्मान का भाव रखता है और उनके साथ एकरस होने की इच्छा रखता है। इस कथन का स्पष्ट उल्लेख पाल ने किया कि 'कौमों के सभी इंसानों का खून एक समान है। उनमें से न तो किसी का खून यहूदी है और न यूनानी है, न कोई बंधक है और न कोई स्वतंत्र है, न कोई पुरूष है और न कोई स्त्री है। वे सभी प्रभु ईसा की दृष्टि में एक समान है। प्लाइमाउथ पहुंचकर इग्लैंड प्यूरिटन संप्रदाय के पादरियों ने भी कुछ ऐसी ही बहुत अच्छे ढंग से कहा था : 'ईश्वर की पवित्र प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक शरीर के रूप में साथ–साथ गुथे हुए हैं। .... इसी कारण हम एक–दूसरे की भलाई की चिंता करते हैं और संपूर्ण मानवता के हितो के लिए प्रतिबद्ध हैं।' यही भाव भाईचारे का मूल है। भाईचारे से सामाजिकता मजबूत होती है और इससे प्रत्येक व्यक्ति में एक ऐसी प्रभावशाली लगाव पैदा होता है, जिसके माध्यम से व व्यावहारिक रूप से दूसरों के कल्याण के बारे में सोचता है। इससे वह दूसरों की भलाई में अपनी भावनाओं को अधिक–से–अधिक जोड़ता है या कम–से–कम इसके लिए व्यावहारिक रवैया अपनाता है। भाईचारे की मनोवृत्ति उसे सहजता से सचेत करती है कि वह उस व्यक्ति के समान है जो दूसरों को सम्मान देता है। दूसरों की भलाई उसके लिए उतनी ही स्वाभाविक हो जाती है, जितनी कि हमारे अस्तित्व के लिए कोई भौतिक अवस्था आवश्यक होती है। जहां लोग दूसरों के साथ सहानुभूति की संपूर्णता का अनुभव नहीं करते, वहां उनके आचरण में समरसता असंभव होती है जिस व्यक्ति में सामाजिक भावना का अभाव होता है, वह दूसरों के बारे में सिवाय इसके और कुछ नहीं सोच सकते कि वे उसके प्रतिद्वंद्वी हैं। इसलिए वह अपनी खुशियों के लिए उन्हें पराजित करने की चेष्टा में लगा रहता है।

स्वतंत्रता क्या है और स्वतंत्र समाज–व्यवस्था में यह क्यों आवश्यक है?

स्वतंत्रा को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है एक नागरिक स्वतंत्रता होती है और दूसरी राजनीतिक स्वतंत्रता। नागरिक स्वतंत्रता के अंग हैं– (1) विचरण की स्वतंत्रता, अर्थात कानूनी प्रक्रिया के बिना बेरोक–टोक आवागमन, (2) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, इसमें विचारों की स्वतंत्रता, पढ़ने की स्वतंत्रता, लिखने की स्वतंत्रता तथा बातचीत करने की स्वतंत्रता शामिल होती है, और (3) कार्य करने की स्वतंत्रता।

पहले प्रकार की निस्संदेह मौलिक स्वतंत्रता है। यह न केवल मौलिक, बल्कि अत्यंत आवश्यकता भी है। इसके महत्व के संबंध में कोई संदेह नहीं है। दूसरी स्वतंत्रत जिसे विचारों की स्वतंत्रता कहा जा सकता है, कई कारणों से महत्वपूर्ण है। यह बौद्धिक नैतिक, राजनीतिक तथा सामाजिक सभी प्रकार की उन्नति के लिए आवश्यक है। जहाँ यह स्वतंत्रता नहीं होती, वहां यथास्थिति रूढ़ हो जाती है और सभी मौलिकताएं, यहाँ तक कि अत्यंत आवश्यक मौलिकता भी हतोत्साहित हो जाती हैं। कार्य की स्वतंत्रता का अर्थ यह है कि व्यक्ति जो चाहे सो करे। इतनी ही पर्याप्त नहीं है, कार्य की स्वतंत्रता औपचारिक हो। यह वास्तविक अर्थ में होनी चाहिए। जैसा कि स्पष्ट है, स्वतंत्रता का तात्पर्य विशिष्ट कार्य को करने की प्रभावी शक्ति से है। जहां इस स्वतंत्रता का लाभ उठाने के साधन मौजूद नहीं है, वहां यह स्वतंत्रता नहीं है। कार्य करने की वास्तविक स्वतंत्रता केवल वहीं पर होती है, जहां शोषण का समूल नाश कर दिया गया है, जहां एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग पर अत्याचार नहीं किए जाते, जहां बेरोजगारी नहीं है, जहां गरीबी नहीं है, जहां किसी व्यक्ति को अपने धंधे के हाथ से निकल जाने का भय नहीं है, अपने कार्यों के परिणामस्वरूप जहां व्यक्ति अपने धंधे की हानि घर की हानि तथा रोजी–रोटी की हानि के भय से मुक्त है।

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

राजनैतिक स्वतंत्रता का तात्पर्य व्यक्ति की उस स्वतंत्रता से है जिसके अनुसार वह कानून बनाने तथा सरकारों को बनाने अथवा बदलने में भागीदार होता है। सरकारों का गठन इसलिए किया जाता है जिससे कि वे व्यक्ति के लिए कुछ अनन्य अधिकार, जैसे जीवन–स्वतंत्रता तथा प्रसन्नता के साधन सुरक्षित ढंग से उपलब्ध कराएं। अतः सरकार वहां से ही अपने अधिकार प्राप्त करे, जिनके अधिकारों को सुरक्षित रखने का दायित्व उसे सौंपा गया है। इसका तात्पर्य यह है कि सरकार को अपना अस्तित्व, अपनी शक्ति, अपना अधिकार उन लोगों से ही प्राप्त करना चाहिए, जिन पर वह शासन करती है। वास्तव में राजनीतिक स्वतंत्रता मानव–व्यक्तित्व तथा समानता के सिद्धांत से उत्पन्न होती है क्योंकि इसका अर्थ यह होता है किस सभी प्रकार का राजनीतिक अधिकार जनता से प्राप्त होता है तथा जनता दूसरों के द्वारा नहीं, बल्कि अपने द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए लोगों के सार्वजनिक तथा निजी जीवन को नियंत्रित करने तथा दिशा–निर्देश देने में समर्थ हैं।

स्वतंत्र समाज–व्यवस्था के से दोनों सिद्धांत एक–दूसरे से जुड़े हैं। इन्हें अलग नहीं किया जा सकता। एक बार यदि पहले को स्वीकार कर लिया जाए, जो दूसरा सिद्धांत स्वतः ही आ जाता है। यदि एक बार मानव–व्यक्तित्व की पवित्रता को स्वीकार कर लिया जाए तो व्यक्तित्व के विकास के लिए उचित वातावरण के रूप में स्वतंत्रता, समानता तथा भाईचारे की आवश्यकता को भी स्वीकार किया जाना चाहिए।

II

हिंदू समाज–व्यवस्था इन सिद्धांतों को कहां तक मान्यता प्रदान करती है? यह जानकारी होना बहुत आवश्यक है, क्योंकि यह केवल इसी बात पर निर्भर करता है कि समाज किस सीमा तक इन सिद्धांतों को मान्यता देता है, इस कसौटी पर कसकर ही इसे एक स्वतंत्र समाज–व्यवस्था कहा जा सकता है।

क्या हिन्दू समाज–व्यवस्था में व्यक्ति का महत्व है? क्या यह उसकी विशिष्टता तथा नैतिक जवाबदेही को मान्यता देती है? क्या यह उसे प्रतिबंधों का दास न मानकर उसे राज्य के विरूद्ध सिर उठाने का अधिकार देकर उसे साध्य के रूप में स्वीकार करती है? इस विषय पर बातचीत करने के लिए निर्गमन उस प्रसंग को स्मरण करना होगा, जब जहोवा ने इजोकिल से कहा था :

''देखो! सभी आत्माओं पर मेरा अधिकार है, जैसे कि पिता की आत्मा मेरी है वैसे ही पुत्र की आत्मा भी मेरी है, जो आत्मा पाप–कर्म करती है, वह नष्ट हो जाएगी....पुत्र, पिता के दुराचार का भागीदार न होगा, और न पिता ही पुत्र के दुराचार का भागी होगा। पुण्यात्मा की पवित्रता का लाभ उसी पुण्यात्मा को मिलेगा, तथा पापी के पाप–कर्म का परिणाम उसी पापात्मा को भुगतना पड़ेगा।''

यहां व्यक्ति विशेष की विशिष्टता तथा उसके नैतिक दायित्व पर बल दिया गया है। हिंदू समाज–व्यवस्था व्यक्ति को सामाजिक उद्देश्य का केन्द्र नहीं मानती, क्योंकि हिन्दू समाज–व्यवस्था मुख्य रूप से श्रेणी या वर्ण पर आधारित है, न कि व्यक्ति पर। मूल तथा औपचारिक रूप से हिंदू समाज–व्यवस्था ने चार वर्णों को मान्यता दी है : (1) ब्रह्माण (2) क्षत्रिय (3) वैश्य, तथा (4) शूद्र। आज इसमें पांच वर्ग शामिल हैं। पांचवे को पंचम या अस्पृश्य कहा जाता है। हिंदू समाज की इकाई न कोई ब्राह्मण व्यक्ति है और न क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अथवा पंचम वर्ण का व्यक्ति ही उसकी इकाई है। यहां तक कि परिवार को भी हिंदू समाज–व्यवस्था द्वारा समाज की इकाई नहीं माना जाता। हां, केवल शादी–विवाह तथा उत्तराधिकार के मामलों में ऐसा माना जाता है। हिंदू समाज–व्यवस्था में व्यक्ति विशेष की योग्यता का कोई स्थान नहीं है तथा वैयक्तिक न्याय का भी ध्यान नहीं रखा जाता है। यदि किसी व्यक्ति को कोई विशेषाधिकार प्राप्त है तो ऐसा इसलिए नहीं है कि वह व्यक्तिगत रूप से उसका अधिकारी है। यह विशेषाधिकार उसे उसके वर्ण के कारण मिलता है, और यदि वह उसका उपभोग करता है तो सिर्फ इसलिए कि वह एक वर्ण–विशेष का है। इसके विपरीत यदि किसी व्यक्ति को कष्ट भोगना पड़ रहा है तो उसका कारण भी उसका वर्ण ही है यह दुरावस्था वर्ण के आधार पर थोपी जाती है और यदि वह इसके कारण पिस रहा है तो इसका उत्तरदायी उसका वर्ण है।

क्या हिंदू समाज–व्यवस्था भाईचारे को मानती हैं? ईसाई तथा मुसलमानों की तरह हिंदू भी यही मानते हैं कि इंसान को ईश्वर ने पैदा किया है। लेकिन जहां ईसाई और मुसलमान इसे पूर्ण सच्चाई मानते हैं, हिंदू इसे अर्द्ध–सत्य मानते हैं। उनके अनुसार इस पूर्ण सत्य के दो भाग हैं पहला भाग तो यह है कि मनुष्य को ईश्वर ने पैदा किया है। दूसरा भाग यह है कि ईश्वर ने अपने दैवी शरीर के भिन्न–भिन्न भागों से भिन्न–भिन्न वर्ण के लोगों को पैदा किया है। हिंदू पहले भाग की तुलना में दूसरे भाग को अधिक महत्वपूर्ण तथा अधिक मौलिक मानते हैं।

हिंदू समाज–व्यवस्था इस सिद्धांत पर आधारित है कि ईश्वर ने मानव को अपने शरीर के भिन्न–भिन्न हिस्सों से पैदा किया है, अतः पाल या पवित्र स्थानों की यात्रा कराने वाले पादरियों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों का इसमें कोई स्थान नहीं है। ब्राह्मण, क्षत्रिय ईश्वर की भुजाओं से पैदा हुआ है। क्षत्रिय, वैश्य का भाई नहीं है क्योंकि क्षत्रिय ईश्वर की भुजाओं तथा वैश्य उसकी जंघा से पैदा हुआ है। चूंकि कोई किसी का भाई नहीं है, अतः कोई किसी का रक्षक नहीं है।

इस सिद्धांत ने, कि भिन्न–भिन्न वर्ण ईश्वर के भिन्न–भिन्न अंगों से पैदा हुए हैं, इस विश्वास को पैदा किया है कि यह ईश्वरीय इच्छा है कि वे सभी वर्ण अलग–अलग रहें तथा अपनी अलग–अलग पहचान बनाए रखें। इसी विश्वास ने हिंदुओं में अलग–अलग रहने तथा अपने शेष साथी हिंदुओं से भिन्न, विशिष्ट पहचान बनाए रखने की भावना को बल दिया है। मनुस्मृति के उपनयन या यज्ञोपवीत पहनने के निमंकित नियमों की तुलना कीजिए :

2.36 ब्राह्मण–बालक का गर्भ से आठवें वर्ष में क्षत्रिय–बालक का गर्भ से ग्यारहवें वर्ष में और वैश्य–बालक का गर्भ से बारहवें वर्ष उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार कराए।

2.41 ब्रह्मचारी अपनी जाति के अनुसार शरीर के ऊपरी भाग पर कृष्णमृग चितकरते मृत तथा बकरे की खाल शरीर के निचले भाग पर सन, क्षौम या ऊन के बने वस्त्र पहने।

2.42 ब्राह्मण की मेखला में तीन गाठें मूंगा घास के तीन धागों से और चिकनी व मुलायम, क्षत्रिय की मेखला मुर्वा धागे की तथा वैश्य की मेखला सन के धागों की बनी होगी चाहिए।

2.43 यदि मूंगा घास आदि प्राप्त न हो, तो (मेखला) कुश अश्मंतक तथा बल्वज (रेशों) की बनाई जा सकती है जिसमें (परिवार की रीति–रिवाज के अनुसार) एकल–तिहरी गांठ या तीन या पांच गांठे लगाई जा सकती हैं।

2.44 ब्राह्मण का यज्ञोपवीत रूई का, क्षत्रिय का यज्ञोपवीत सन के धागों का तथा वैश्य का यज्ञोपवीत ऊनी धागों का ऊपर की ओर से बंटा हुआ तीन लड़ी का होना चाहिए।

2.45 पवित्र विधान के अनुसार ब्राह्मण को बेल या पलाश का, क्षत्रिय को बट या खैर का वैश्य को पीलु या गूलर का दंड धारण करना चाहिए।

2.46 ब्राह्मण का दंड केश तक, क्षत्रिय का दंड ललाट तक तथा वैश्य का दंड नाक तक लंबा होना चाहिए।

2.48 सूर्योपसना के बाद अपनी पसंद का दंड लेकर अग्नि की प्रदक्षिणा कर विद्यार्थी ब्रह्मचारी को विधिपूर्ण भिक्षा मांगनी चाहिए।

2.49 उपवीत ब्राह्मण को 'भवति' शब्द का वाक्य के पहले उच्चारण कर क्षत्रिय को भवति शब्द का वाक्य के मध्य में उच्चारसण कर तथा वैश्य को भवति शब्द का वाक्य के अंत में उच्चारण कर भिक्षा याचना करनी चाहिए।

इसको पढ़कर कोई भी इन भिन्नताओं के कारणों के बारे में पूछ सकता हैं उपर्युक्त नियम विद्यार्थियों या तथाकथित ब्रह्मचारियों से संबंधित है जो वेदों का अध्ययन करने को तत्पर है यह भिन्नताएं क्यों होनी चाहिए? ब्राह्मण बालक के उपनयन की उम्र और क्षत्रिय या वैश्य बालक के उपनयन की उम्र में भिन्नता क्यों होनी चाहिए? उनके वस्त्र भिन्न–भिन्न प्रकार के क्यों होने चाहिए? उनके दंड अलग–अलग पेड़ों की लकड़ी से क्यों बनाए जाने चाहिए? उनके दंड की लम्बाई अलग–अलग क्यों होनी चाहिए? भिक्षा–याचना करने के समय 'भवति' शब्द को वाक्य का उच्चारण करते समय अलग–अलग स्थानों पर क्यों रखना चाहिए? ये भेद न तो आवश्यक हैं और न ही लाभदायक है। इसका एकमात्र उत्तर यह है कि यह भेद सहज हिंदू प्रवृत्ति का परिणाम है कि वे अपने ही साथी मानवों से अलग–अलग रहते हैं, जो लोगों के इस विश्वास के कारण है कि वे सभी ईश्वरीय शरीर के भिन्न–भिन्न अंगों से पैदा हुए हैं।

इसी विश्वास के कारण हिंदुओं की यह भी मूल प्रवृत्ति है कि भेद को नजरअंदाज न किया जाए, बल्कि उस पर बल दिया जाए, उसे पहचाना जाए तथा उसे उजागर किया जाए। जाति के अस्तित्व की ओर उसके विशिष्ट वस्त्रों और नाम से ध्यान आकर्षित किया जाना चाहिए। संप्रदाय के लिए उसकी पहचान होना आवश्यक है। भारत में 92 मत–मतांतर है। उनमें से प्रत्येक का अलग चिन्ह है। एक–दूसरे से पृथक 92 संकेतों की खोज करना जटिल कार्य है। इसी कारण अति मेधावी व्यक्ति को भी इसमें सिर खपाने की हिम्मत नहीं होगी तथापि, हिंदुओं ने इसे पूरा किया है, जिसे मूर द्वारा अपनी हिंदू पेंथियोन पुस्तक में दिए गए इन तिलकों के सचित्र निरूपण में देखा जा सकता है।

निस्संदेह पृथक्करण तथा अलगाववाद की भावना की बहुत व्यापक और अनियंत्रित अभिव्यक्ति जातिप्रथा है। यह समझ लेना चाहिए कि जाति एक नहीं, अनेक हैं। जातियां हो सकती हैं। लेकिन एक जाति जैसी कोई चीज नहीं हो सकती। लेकिन सिद्धांत रूप में यह मान लिया जाए कि जातियां होनी चाहिए, तो कितनी जातियां होनी चाहिए? मूल रूप से शुरू में केवल चार जातियां थी। आज कितनी है? अनुमान है कि कुल मिलाकर ये दो हजार से कम नहीं है। यह तीन हजार भी हो सकती है। इस संदर्भ में चौंकाने वाला यह केवल एक पहलू नहीं हैं, और भी है। जातियों को भी उपजातियों में बांटा गया है। उनकी संख्या अनगणित हैं। ब्राह्मण जातियों की कुल आबादी लगभग डेढ़ करोड़ है। लेकिन ब्राह्मण जाति में भी 1,886 उपजातियां हैं। केवल पंजाब में ही सारस्वत ब्राह्मण 469 उपजातियों में बंटे हैं। पंजाब के कायस्थों की 890 उपजातियां हैं। इसी प्रकार समाज को छोटे–छोटे टुकड़ों में बांटने वाली इस अंतहीन प्रक्रिया के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। टुकड़ों में बांटने वाली इस प्रक्रिया से सामाजिक जीवन बिल्कुल असंभव–सा हो गया है। इससे जातियां इतने छोटे समूहों में बंट गई हैं कि उससे बाह्य जातियों के साथ विवाह–संबंध करना बिल्कुल असंभव सा हो गया है। बनियों की कुछ उपजातियों के तो सौ परिवारों से ज्यादा घर नहीं हैं। वे आपस में इतने मिले–जुले हैं कि सगोत्रता के नियमों का उल्लंघन किए बिना उनकी जातियों में शादी–विवाह करना कठिन हो गया है।

यह उल्लेखनीय है कि छोटे–मोटे बहाने से ही इन जातियों के उपजातियों में विभाजित होने के कारण हैं। जातियो–उपजातियों में स्थान परिवर्तन, व्यवसाय परिवर्तन, सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन, प्रदूषण के कारण परिवर्तन, व्यवसाय परिवर्तन, सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन, प्रदूषण के कारण परिवर्तन, मालिकाना हक के कारण परिवर्तन, झगड़े के कारण परिवर्तन, धर्म परिवर्तन के कारण से बिखराव आता जाता है। श्री ब्लंट ने हिंदुओं में विद्यमान इस प्रवृत्ति का जीवंत वर्णन करने के लिए कई उदाहरण दिए हैं यहां सभी को प्रस्तुत करना संभव नहीं है। अतः यहां केवल एक उदाहरण की प्रस्तुत किया जा रहा है, जो यह दर्शाता है कि छोटे–मोटे झगड़े एक जाति को उपजातियों में कैसे बांट देते हैं। जैसा कि श्री ब्लंट ने कहा है :

''लखनऊ में सटीक नाम की एक उपजाति है, जिसमें तीन गोल अथवा समूह थे। इन्हें मानिकपुर, जायसवाल तथा दलमान के नाम से जाना जाता था। उनमे रोटी–बेटी का व्यवहार था और वे अपने चौधरी अथवा प्रधान के नेतृत्व में पंचायत में एक साथ बैठते थे। बीस वर्ष पहले प्रत्येक समूह का एक ही चौधरी होता था। लेकिन आज जैसवाल–समूह के ही तीन चौधरी हैं तथा मानिकपुर–समूह के दो। झगड़े का पहला कारण था कि

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

एक और (जिसका गोल नहीं दिया गया है) गली में फल बेचा करती थी। उसके भाई–बंधुओं ने उसे ऐसा न करने का आदेश दिया क्योंकि ऐसा करना उनकी बिरादरी की शान के खिलाफ था। औरतों को केवल दुकानों पर बैठकर बिक्री करना चाहिए। वह और उसका पति हठी थे, और अंत में उसके ही अपने गोल ने उन्हें बिरादरी से बाहर कर दिया। वैसे दलमान गोल, जो इस कार्यवाही से सहमत नहीं था, उसने औरत के पति को जाति से बाहर रखने के बजाए 80 रूपये दंड लेकर अपने वर्ग में ले लिया। झगड़े का दूसरा कारण यह था कि एक आदमी (जिसका गोल नहीं दिया गया है) को अपने ही गोल द्वारा बिरादरी से बाहर कर दिया गया और जब कि यह मामला न्यायालय में विचारधीन था, जैसवाल चौधरी ने गलती से उसे रात के भोजन पर बुला लिया। इस पर तीनों गोलों ने एक साथ मिलकर चौधरी पर 30 रू. का दंड लगा दिया। अंत में दंड की राशि एकत्रित की गई और यह निर्णय लिया गया कि कथा कराई जाए। दलमु चौधरी ने कहा कि वह तो अपना हिस्सा नकद लेगा। लेकिन मानिकपुर चौधरी (जिसके पास संयुक्त राशि जमा थी) ने इससे असहमति व्यक्त करे हुए यह रवैया अपनाया कि जो कथा होने जा रही है, उसमें दलमु लोग यदि चाहें तो आ सकते हैं, और न चाहें तो न आएं। इस स्तर पर इस मामले को न्यायलय में ले जाया गया, इसी बीच तीनों गोलों ने एक–दूसरे के साथ शादी–विवाह करना बंद कर दिया। इन झगड़ों के कारण सगोत्र शादी विवाह होने वाली उपजाति तीन समूहों में बंट गई और एक गोल दूसरे गोल के खिलाफ हो गया।

यदि किसी जाति का कोई समूह पूजा का कोई नया या असामान्य माध्यम अपना है, जिसे उसकी बिरादरी के अन्य सदस्य मान्यता नहीं देते, तो वह गुट टूट जाएगा और एक सगोत्र उपजाति बन जाएगी। यदि कुछ उपजातियां देखने में नहीं आती हैं तो इसका कारण उनकी सहिष्णुता है कि वह किसके साथ रोटी–बेटी का व्यवहार करते हैं तथापित हम पाएंगे कि तेली तथा कोरी जातियों में महाभीर व पंचप्रिय और बढ़ई, भंगी तथा खडेरा जातियों में नमकशाली उपजातियां पाई जाती हैं।''

ये जातियां एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करती हैं, इनका मूल मंत्र है कि अलग–अलग रहो, 'एक दूसरे के साथ विवाद न करो',, 'एक दूसरे के साथ खान–पान न करो तथा 'एक–दूसरे को न छुओ'। श्री ब्लंट ने इस सिति का बहुत ही मार्मिक वर्ण किया है। वह कहते हैं :

''एक हिंदू या तो अकेला खाना खाता है, या फिर अपनी बिरादरी के लोगों के साथ खाता है। स्त्रियां पुरूषों के साथ खाना नहीं खा सकती। वे तब तक इंतजार करती है, जब तक कि उनके पति खाना समाप्त नहीं कर लेते। जहां तक खाने या खाने के किसी भाग में कच्चा खाना (यह हमेशा होता है क्योंकि हर खाने में चपाती होती है) शामिल होता है, तो ऐसे में आदमी को बड़े मंत्रोपचार जैसे एतिहायती कदमों के साथ भोजन करना पड़ता है। वह जमीन पर अपने चारों तरफ चौकोर लकीर खींचकर (चौका) बैठता है, जिसके अंदर चूल्हा या खाना बनाने का स्थान होता है। यदि किसी अजनबी की छाया भी ऐसे स्थान पर पड़ जाती है, तो सारा पका–पकाया खाना झूठा हो जाता है और उसे फेंक दिया जाता है। एक ही समूह में हिंदू सेवकों को एक–दूसरे से अलग–अलग अपने–अपने चौके में मिट्टी के चूल्हों पर अपना खाना बनाते हुए और अकेले बैठकर खाते हुए देखा जा सकता है।

कुछ मिलाकर पानी पीने के नियम भी ठीक उसी प्रकार हैं, जिस प्रकार पक्का खाना स्वीकार करने के। लेकिन इसमें प्रवृत्ति कुछ हद तक लचीली है। यह बात उस पात्र पर लागू होती है, जिसमें पानी रख जाता है। एक उच्च जाति का आदमी निम्न जाति के आदमी से अपना लोटा तो भरवा लेगा, पर उसके लोटे से पानीं नहीं पिएगा। फिर, ऊंची जाति वाला किसी भी व्यक्ति को (अस्पृश्यों को छोड़कर) पानी पिलाएगा, और ऐसा वह अपने लोटे से उस पीने वाले के लोटे में पानी डालकर करेगा। स्टेशनों पर रेल–यात्रियों को पानी की आपूर्ति किए जाने के लिए रखे हुए सभी आदमी बढ़ई, बारी, भड़भूजे, हलवाई, कुम्हार तथा नाई है। निस्संदेह कुछ उच्च जातियों के भी हैं।

धूम्रपान के नियम तो और भी सख्त हैं। बहुधा देखा गया है कि कोई आदमी अपनी बिरादरी के लोगों के अलावा किसी और के साथ धूम्रपान नहीं करता। इसका कारण बहुत ही स्पष्ट है कि धूम्रपान में सामान्यतः हुक्के का उपयोग किया जाता है और इसमें ज्यादा नजदीकी संबंध निहित होते हैं, यहां तक कि खाने से भी ज्यादा। यह नियम वास्तव में इतना कठोर है कि इस तथ्य के आधार पर जाट, अहीर और गूजर एक–दूसरे से ज्यादा सगे–संबंधी माने जाते हैं, अतः वे एक–दूसरे के साथ धूम्रपान कर सकते हैं। कुछ जातियां, उदाहरण के लिए कायस्थ नारियल तथा सामान्य तरीके से धूम्रपान करने के बीच अंतर रखते हैं। नारियल द्वारा धूम्रपान करने में नलकी के चारों ओर हाथ गोल करके बंद कर दिया जाता है और नली को मुंह में डाले बिना धूम्रपान किया जाता है। पात्रों के बारे में कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसके भी नियम निर्धारित हैं कि किस प्रकार के बर्तन बनाए जाने चाहिए। लेकिन ये नियम सामाजिक होने के बजाए धार्मिक ज्यादा हैं। हिंदुओं को मिश्र धातु या पीतल के बर्तनों का उपयोग करना चाहिए हालांकि मिश्र धातु का उपयोग अनेक तथा छोटी–छोटी निषेधज्ञाओं से सीमित है और यदि यह पात्र अशुद्ध हो जाते हैं, तो उनको शुद्ध करने का तरीका केवल यह होता है कि उन्हें पुनः ढाला जाए)। बर्तन झूठे हो जाने के डर के कारण हर आदमी के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपने उपयोग के लिए कुछ निजी बर्तन रखे। इनमें कम से कम एक लोटा (पीने का पात्र), बटलाई तथा थाली होनी चाहिए। उच्च जाति के ग्रामीण लोग एक कटोरा तथा गागर इसमें और जोड़ देते हैं। दावत के लिए एक जाति के लोग सामान्यतः सभी प्रकार के बर्तन बड़ी मात्रा में रखते हैं, जिन्हें वे मेजबान को बरतने के लिए देते हैं। इन बर्तनों को दंड–स्वरूप प्राप्त हुए धन से खरीदा जाता है, और यह सभी की साझा संपत्ति होती है''

ऐसे मनोविकारों पर आधारित समाज–व्यवस्था में भाईचारा कैसे हो सकता है? भाईचारे की भावना तो दूर की बात है, जातियों के आपसी संबंध भी भ्रात–हत्या जैसे हैं। वर्ग–चेतना, वर्ग–संघर्ष तथा वर्ग–युद्ध जैसी विचारधारा के बारे में माना जाता है कि यह कार्लमार्क्स के लेखन से अस्तित्व में आई। यह एक भारी गलती है। भारत वह देश है, जिसने वर्ग संघर्ष का वास्तविक अनुभव किया है। भारत वह भूमि है, जहां ब्राह्मणों व क्षत्रियों के बीच वर्ग–युद्ध हुआ है, जो कई पीढ़ियों तक चला है और इतनी कटुता के साथ लड़ा गया कि इससे समूलनाश–युद्ध का वातावरण ही बन गया था।

यह नहीं माना जाना चाहिए कि भाई द्वारा भाई की हत्या करने की भावना ने भाईचारे की भावना को जन्म दिया है। हिंदू समाज व्यवस्था में पृथक्करण की ठीक वही भावना आज भी देखी जा सकती है, जो कि निम्न विवरण से स्पष्ट है :

प्रत्येक वर्ग अपनी अलग–अलग व पृथक उत्पत्ति का दावा करता है। कुछ यह दावा करते हैं कि वे अमुक ऋषि या अमुक योद्धा की संतान हैं लेकिन हरेक मामले में ऋषि या नायक भिन्न होता है, जिसका दूसरी जातियों के जनक कहे जाने वाले अन्य ऋषियों या नायकों से कोई संबंध नहीं होता। प्रत्येक जाति इस बात का ध्यान रखती है कि वह अपने को दूसरी जाति से श्रेष्ठ सिद्ध करे। इसका सही चित्रण अतिसहभोजता के नियमों तथा अतिसंगम के नियमों द्वारा किया गया है। जैसा कि श्री ब्लंट ने कहा है :

''यह जानना आवश्यक है कि खान–पान के संबंध में रसोइए की जाति पक्का मापदंड हैं। मेजबान कोई भी हो सकता है। अतः यह स्वाभाविक है कि उच्च जाति का हिंदू किसी भी जाति के व्यक्ति का खाना खा सकता है, बशर्ते मेजबान का रसोइया उपयुक्त जाति का हो। और यही कारण है कि अनेक रसोइए ब्राह्मण हैं। हिंदू कच्चा खाना, जो कि पानी से बनाया जाता है तथा पक्का खाना जो कि घी में बनाया जाता है, के बीच अंतर करता है। यह अंतर इस सिद्धांत पर आधारित है कि गाय का घी शुद्ध पदार्थ है, इसलिए अशुद्ध की आशंका नहीं रहती। इसीलिए इस सुविधाजनक मान्यता के कारण हिंदू कच्चे खाने की अपेक्षा पक्के खाने के मामले में कम रूढ़िवादी होता है और तदनुसार अपने प्रतिबंधों को सीमित करता है।

निकट संबंधों के बारे में श्री ब्लंट कहते हैं :

''निकट संबंधों की परंपरा के कारण कई जातियों के शादी–व्यवहार में महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है। जहां यह लागू होता है, वहां विजातीय विवाह संबंधी समूहों को उनके सामाजिक स्तर के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है, लेकिन देता नहीं है। यह नियम राजपूतों के बीच बहुत ज्यादा प्रचलित है। लेकिन कई अन्य जातियों द्वारा भी इनका पालन किया जाता है....। वास्तव में लगभग सभी हिंदुओं के बीच अति–संकीर्णता की प्रवृत्ति पाई जाती है।'' संकीर्णता के आधार पर खान–पान और संबंधों में इन नियमों के पीछे क्या चीज रही है? इसके पीछे छोटे–बड़े की भावना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। सभी जातियां इस भावना से ग्रस्त हैं और कोई भी जाति ऐसी नहीं है जो इससे मुक्त हो। हिन्दू समाज–व्यवस्था जातियों की सीढ़ी है, जिसमें एक के ऊपर एक को रखा गया है यह ऐसी तराजू है, जिसमें घृणा का पलड़ा भारी से भारी होता जाएगा।

यह भावना एक जाति द्वारा दूसरी जाति पर कटाक्ष करने के उद्देश्य से बनाई गई कहावतें में परिलक्षित होता है। इसने निम्न जाति के लेखकों को अपने साहित्य में यह सुझाव देने को भी प्रेरित किया है कि तथाकथित उच्च जाति का उद्भव घटिया व शर्मनाम है सहयाद्रि खड़ इसका सबसे बढ़िया उदाहरण है। यह एक पुराण है जो कि अपनी शैली में अन्य परपंरागत पुराणों से भिन्न है इसमें भिन्न–भिन्न जातियों के बारे में वर्णन मिलता है। ऐसा करते समय इसमें अन्य जातियों की उत्पत्ति को सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। किन्तु ब्राह्मण जाति की उत्पत्ति को घृणित बताया है इसका उत्तर नकारात्मक है। यह सिद्धांत कि आदमी स्वतंत्र पैदा होता है, हिंदू समाज–व्यवस्था के खिलाफ है यह समाज आध्यात्मिक दृष्टिकोण से इस सिद्धांत को गलत मानता हैं हिंदू समाज–व्यवस्था के अनुसार हालांकि यह सही है कि सभी मनुष्य इस ब्रह्मांड के सृजक प्रजापति की संतान है, पर वे समान नहीं हैं, क्योंकि वे प्रजापति के शरीर के भिन्न–भिन्न अंगों से पैदा हुए हैं। ब्रह्माण उनके मुंह से, क्षत्रिय उनकी भुजाओं से, वैश्य उनकी जंघा से तथा शूद्र उनके पैरों से पैदा हुए हैं। जिन अंगों से वे पैदा हुए हैं, वे अंग असमान महत्व रखते हैं, इसलिए आंखों के द्वारा पैदा किए गए मनुष्य भी आसमान हैं। जीव–विज्ञान के दृष्टिकोण से हिंदू समाज–व्यवस्था यह परवाह नहीं करती कि वह इस सिद्धांत की जांच कराए कि क्या वह तथ्य पर आधारित है उन्होंने यह जानने की चेष्टा नहीं की कि प्रत्येक व्यक्ति गुण, स्वभाव और प्राकृतिक रूप से समान है या नहीं। यदि प्राकृतिक और स्वभावगत असमानता रहती है, तो चलो ठीक है फिर तो यह सिद्धांत ही कचरा है कि जन्म से ही सभी भौतिक और प्रवृत्ति के आधार पर समान होते हैं। वास्तव में हिंदू समाज–व्यवस्था इस मत के प्रति उदासीन है। यह इसके नैतिक सिद्धांत के प्रति उतनी ही उदासीन है। यह इस बात को मानने से इंकार करती है कि मनुष्य अलग–अलग हैसियत में क्षमता तथा स्वभाव के दृष्टिकोण से भिन्न होते हुए भी मानव कहलाने के अधिकारी हैं और उन्हें सम्मान मिलना चाहिए तथा समाज की भलाई इसी में हो सकती है कि यदि वह अपने संगठन को इस तरह से योजनाबद्ध करे, भले ही उनकी शक्तियां छोटी या बड़ी हों, इसके सभी सदस्यों को समान रूप से मौका मिलना चाहिए कि वे अपनी–अपनी शक्तियों का सर्वोत्तम उपयोग व प्रदर्शन करें। परिस्थितियों, संस्थाओं तथा जीवन के तौर–तरीकों को यह समाज–व्यवस्था अनुमति नहीं देगी। यह समतावादी परंपरा के विरूद्ध हैं।

साभार :
बाबा साहेब डा. अम्बेडकर
संपूर्ण वाङ्मय खण्ड 6
पेज संख्या 123 से 136 तक
बाबा साहेब डा. अम्बेडकर

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आनन्द मोहन

सेवानिवृत्त संयुक्त आयुक्त
हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग निदेशालय, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रो. (डा.) राम प्यारे

सदस्य उ. प्र. लोक सेवा आयोग, प्रयागराज, उ. प्र.
मो.: 9140967616

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

के. पी. वर्मा

सेवानिवृत्त उपायुक्त
हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग निर्देशालय, कानपुर
मो० : 9415268129

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रोहित

अधिशासी अभियन्ता
मध्य गंगा नहर निर्माण खंड 10
सिचांई एवं जल संसाधन विभाग, बुलन्दशहर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रताप सिंह

प्रशासनिक अधिकारी
मुख्य अभियंता कार्यालय, लोक निर्माण विभाग, कानपुर
मो.: 9415430469

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अजय बौद्ध

सुपरिटेंडेंट सी.जी.एस.टी.
सर्वोदय नगर, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुरजीत सिंह

जूनियर इंजीनियर
निर्माण खण्ड भवन लोक निमार्ण विभाग, कानपुर नगर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

भूप सिंह

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो० : 9455646040

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रोशन लाल

फोरमैन सिविल इंजी. विभाग
हरकोर्ट बटलर प्राविधिक विश्वविद्यालय, कानपुर
मो० : 9839791024

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अजय कुमार

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर, उ0प्र0
मो० : 7905305856

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मनीष कुमार

प्रोपराइटर
चकेरी गैस सर्विस
222, सदानन्द नगर, अहिरवाँ
मो० 9455857007

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

श्री राम गौतम

वरिष्ठ सहायक द्वितीय मण्डल
सिंचाई कार्य कानपुर
मो० : 7355797143

समस्त सम्मानित क्रमिको एवं नगरवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मेवालाल

प्रधान सहायक
अध्यक्ष मिनिस्ट्रियल एसो. लोक निर्माण विभाग, कानपुर क्षेत्र
सम्प्रेक्षक रा.क.स.प.कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामस्वरूप

प्रशासनिक अधिकारी
उपाध्यक्ष रा0क0स0 परिषद, कानपुर नगर
कार्यालय श्रमायुक्त उ0प्र0 जी0टी0 रोड कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

पंकज कुमार

जूनियर अभियन्ता
लघु० सिंचाई विभाग, फतेहपुर
मो० : 8736913880

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

जगजीवन राम

प्रशासनिक अधिकारी
मण्डलीय अध्यक्ष
मो.: 9450134953
अखिल भारतीय अनु. जाति जनजाति एवं बुद्धिष्ट
भारतीय जीवन बीमा निगम कर्मचारी कल्याण संघ

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामचरन

पम्प आपरेटर
कानपुर विकास प्राधिकरण
मो० : 9984251800

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विजय गौतम

लेखाकार
कोषागार कानपुर नगर
मो० : 9696222033

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुरेश चन्द्र

डिपो मनैजर/नाजीर
उ0प्र0 राज्य हथकरघा निगम लि0 कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रतिमा रानी

प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त उ0प्र0 जी0टी0 रोड कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धीरेन्द्र कुमार

लिपिक
कानपुर विकास प्राधिकरण, कानपुर
मो० : 9305218844

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामकिशोर

मो0: 7080249402
प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त उ.प्र. जी.टी.रोड, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

धर्मेन्द कुमार

कनिष्ठ लिपिक
मो.: 9621999187
जोन–1 नगर निगम कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आर.एल. मौर्य

सहायक सचिव (ग्रा.सं.प्र./दावा)
भा.जी.बी.निगम उ.म.क्षेत्र कार्यालय कानपुर

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सी. के. गौतम

डिप्टी कमिश्नर राज्यकर विभाग
बहराइच

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

श्रीकांत सिंह रंगीला

अधिशासी अभियन्ता
केस्को कानपुर
मो० : 9411887808

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

प्रो. गोलू (हरशुल)

हरि ओम ट्रेडर्स

किराना के थोक व फुटकर विक्रेता
श्री हरि बंधानी हींग
ए/7, नई दाल मण्डी, दुर्गा जी, काली मन्दिर के सामने, नयागंज, कानपुर
मो.: 7307238558

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अरविन्द कुमार

प्रबन्धक उ. प्र. कॉपरेटिव बैंक लि.
शाखा डी.ए.वी. कालेज, कानपुर
मो.: 9956976995

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रामनरेश | धर्मेन्द्र सोनकर

महासचिव (आई.टी. सेवा) अध्यक्ष
इनकम टैक्स एस.सी./एस.टी. एम्पलाइस वेलफेयर एसोसिएशन, कानपुर
मो. 7599101755

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

विनोद भारती अम्बेडकर

राष्ट्रीय मानवाधिकार सर्वेक्षण
जिला महासचिव
मो.: 7355995854

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आर के आजाद

सेवानिवृत्त सहायक मण्डल प्रबन्धक
भारतीय जीवन बीमा निगम
मण्डल कार्यालय बीमा सेवा विभाग, कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

मधु

जीवन एवं स्वास्थ बीमा अभिकर्ता
131, गोमती नगर मकड़ीखेड़ा, कानपुर
मो.: 9838239138

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

रति पाल

सेवानिवृत्त मेट
कानपुर विकास प्राधिकरण

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

इं. कोमल सिंह दोहरे

मिशन 78 काशीराम
मो० : 8400216741

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सुहैब अनवर अन्सारी

प्रबन्धक उत्पादन
उ. प्र. राज्य हथकरघा निगम लि.
जी.टी. रोड, कानपुर उ.प्र.

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

राम अवतार चौधरी

अधिशाषी अभियंता
जलकल विभाग, वाराणसी, उ. प्र.
मो.: 9450272500
पेयजल अमूल्य है इसे बर्बाद न करें, जल ही जीवन है

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

लक्ष्मी नारायण

प्रशासनिक अधिकारी
प्राविधिक शिक्षा निदेशालय कानपुर
मो० : 9450152297

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

छविलाल वर्मा

प्रधानाचार्य
श्रीविद्यानन्द जूनियर हाईस्कूल
जरौली, चरखारी, महोबा, उ.प्र.

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

गीता कुमारी

प्रशासनिक अधिकारी
कार्यालय श्रमायुक्त उ.प्र. जी.टी. रोड कानपुर

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

उड़ान वेलफेयर फाउंडेशन
Let's Fly ...

जगजीवन राम

एडवोकेट
विशेषज्ञ : क्रीमनल, सिविल, फेमिली कोर्ट, माल, रजिस्ट्री आदि।
मो.: 9792598196

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

ई. के. के. लाल

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य / असिस्टेन्ट
अप्रेन्टिस–शिप एडवाइजर राजकीय
आई.टी.आई. फैजाबाद (उ.प्र.)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

सम्पादक की कलम से ....

उमेश्वरी देवी

द्रविड़ भारत को 17 साल शुरू होने की खुशी में सभी सहयोगियों एवं पाठक गणों को बहुत–बहुत साधुवाद। आप सभी का साथ एवं सहयोग ऐसा ही मिलता रहे ताकि, बाबा साहब के विचारों को आगे बढ़ा सके जय भीम नमो बुद्धाये।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अंजु प्रभा पति मोतीलाल

प्रधान सहायक
द्वितीय मण्डल सिंचाई कार्य कानपुर

निःशुल्क परामर्श

न्यू हाईवे सिटी, कानपुर, मो० : 9451221601

पहला सुख हम सब ने ठाना है, आयुर्वेद अपनाना है निरोगी काया

आयुर्वेद की असाध्ये रोगों को जड़ से खत्म करने में सफल है। मनुष्य अपने जीवन शैली मे काफी सावधानियों के बाद भी शारीरिक बीमारियों से ग्रसित हो जाता है। जिसका उपचार आयुर्वेदिक उपचार हर्बल लीक्विड प्रोडक्ट के द्वारा सफल है।
100% शुद्ध आयुर्वेदिक किसी भी प्रकार का कोई Side Effect नहीं।

- मधुमेह
- टी बी
- पथरी की समस्या
- बवासीर
- बाल का गिरना/झड़ना
- किडनी की समस्या
- लिवर की समस्या
- अनियमित मासिक धर्म
- दाँतों की समस्या

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

आशाराम त्यागी

निवासी चरखारी जिला महोबा पुत्र श्री घुराम
युवा ब.स.पा. नेता पूर्व जिला सचिव ठेकेदार आबकारी कान्ट्रेक्शन वर्ग
मो० : 9005874795
श्रीमती

किरन त्यागी

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2025-27
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

अखिल भारतीय एल.आई.सी. बहुजन कर्मचारी एवं अधिकारी अर्गनाइजेशन

जोनल कमेटी उ0प्र0 उत्तराखण्ड	डिवीजनल कमेटी कानपुर
आर. के. गौतम (अध्यक्ष)	एच. एल. गौतम (अध्यक्ष)
मो0: 9532612084	मो0: 9415536159
राधेश्याम वर्मा, महासचिव (उ0प्र0 उत्तराखण्ड)	एस. के. गौतम (मण्डल सचिव)
मो0: 7007038182	मो0: 9415077826

सेवा में,

नाम ....

पता ....

....

....

जल अमूल्य निधि है **जल ही जीवन है**

जलकल विभाग, नगर निगम, कानपुर

जल संरक्षण के हित में उपभोगताओं से अपील

क्रम सं०	क्या करें	क्रम सं०	क्या न करें
1–	जलकल विभाग द्वारा आपूर्ति अथवा इण्डिया मार्क–।। हैण्डपम्प का पानी पानी पीने में प्रयोग करें।	1–	अनाधिकृत रूप से ठेलियों/ट्राली पर पानी बेचने वालों के पानी का प्रयोग न करें।
2–	आपकी पाइप लाइन नाली अथवा किसी अन्य गन्दे स्थान से हो कर जा रही हो तो पंजीकृत प्लम्बर से उसका मार्ग परिवर्तित करा लें अथवा इस पर केसिंग पाइप अवश्य लगवा लें। सर्विस पाइप लाइन पुरानी अथवा क्षतिग्रस्त हो गयी हो तो उसे तत्काल बदलवा लें। अन्यथा गन्दा पानी पेयजल को प्रदूषित करेगा।	2–	पानी की लाइन में बूस्टर पम्प लगा कर, सीधे पानी न लें। यदि आवश्यक हो तो टब अथवा टैंक में जलकल के नल से पानी एकत्र कर उसे बूस्टर पम्प द्वारा ऊपर चढ़ायें।
3–	हैण्डपम्प का प्लेट फार्म साफ रखें।	3–	हैण्डपम्प के चारों तरफ गन्दा पानी एवं गन्दगी न एकत्र होने दें।
4–	गन्दा पानी आने पर जलकल विभाग के क्षेत्रीय कार्यालय अथवा जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०–9235553827 पर फोन कर अवगत करायें।	4–	सीवर मेनहोल में कूड़ा करकट न डालें तथा मेनहोल खुला होने पर तत्काल कन्ट्रोल रूम को सूचित करें।
5–	जलकल विभाग की पाइप लाइन में लीकेज/सीवर समस्या होने पर तत्काल जलकल विभाग के कन्ट्रोल रूम नं०–9235553827/26 पर इसकी जानकारी दें।	5–	पानी लेने के बाद नल/स्टैण्ड पोस्ट खुला न छोड़ें। पानी का भण्डारण करें व अपव्यय रोकें।
6–	पानी एकत्र करने के लिये ढक्कन युक्त साफ बर्तन का प्रयोग करें।	6–	पानी के बर्तन में हाथ न डालें, पानी निकालने के लिये लम्बे हैन्डल के बर्तन का प्रयोग करें।

जन सामान्य के अच्छे भविष्य हेतु जल–संरक्षण

1– बैठकों सेमीनारों प्रदर्शनियों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जहाँ पेयजल आवश्यक हो, एक लीटर के पानी के बोतल के स्थान पर 250–300 मिली० के पानी के बोतल का इस्तेमाल किया जाये, जिससे इस अमूल्य धरोहर को अपव्यय से बचा जा सके।
2– जन सामान्य पानी पीने हेतु छोटे बर्तन/गिलास का उपयोग करें। प्रायः यह देखा जाता है कि लोग बड़े गिलास/बर्तन में पानी लेकर एक या दो घूँट पानी पीने के बाद शेष पानी फेंक देते हैं। इस लिये उतना ही पानी लिया जाये जिसे पिया जा सके।
3– प्रायः यह देखा जाता है कि लोग पीने के पानी (ट्रीटेड) से अपने लान, किचेन, गार्डेन, फूलों की क्यारियों की सिंचाई तथा गर्मियों में घरके सामने की सड़क भिगातें हैं ताकि धूल न उड़े। जनमानस से अनुरोध किया जाता है कि पेयजल की महत्ता को पहचाने एवं इस अमूल्य धरोहर/संसाधन को अपव्यय से बचने का प्रयास करें।
4– ताजा पानी के उपयोग हेतु सायं/विगत दिवस में संरक्षित पीने के पानी को न फेंके/बर्बाद न करें उसे अन्य कार्य में उपयोग में लायें।
5– सर्विस स्टेशनों द्वारा गाड़ी धोने में पीने के पानी का प्रयोग न करें।

नोट – जलकल/जलमूल्य/सीवर कर के बिलों का भुगतान समय से कर छूट का लाभ प्राप्त करें। बिलों का भुगतान जलकल विभाग की वेबसाइट www.jalkalkanpur.in पर आन लाइन भी जमा किये जा सकते हैं।

सचिव – रमेशचन्द्र महाप्रबन्धक – आनन्द कुमार त्रिपाठी

प्रेस विज्ञप्ति

जनपद में संचालित एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजनान्तर्गत प्री–हार्वेस्ट कार्यक्रमों यथा निजी पौधशाला की स्थापना, ऊतक संवर्धन ईकाई की स्थापना, हाईटेक नर्सरी की स्थापना, फल/शाकभाजी/औषधीय/पुष्प क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम, मशरूम उत्पादन, जैविक खेती, संरक्षित खेती (पॉली हाउस/नेट हाउस) तथा पोस्ट–हार्वेस्ट कार्यक्रम जैसे प्याज भण्डार गृह, प्री एवं मशीनीकरण कार्यक्रम अन्तर्गत गार्डन ट्रैक्टर पावर ट्रिलर, पावर स्प्रेयर आदि कार्यक्रमों का लाभ लेने हेतु कृषक भाईयों से अनुरोध है कि कार्यालय जिला उद्यान अधिकारी, कमना न.–315, विकास भवन, माती, कानपुर देहात में आकर आवेदन 15 सितम्बर 2025 तक जमा करें। उक्त कार्यक्रम हेतु आवेदन विभागीय बेवसाइट **dbt.uphorticulture.in** में पंजीकरण कराकर हार्ड कॉपी योजना प्रभारी श्री घनश्याम, उ.नि. को उपलब्ध कराना होगा। परियोजना आधारित कार्यक्रमों के आवेदन तीन प्रतियों में प्रस्तुत किये जायेगें। सभी कार्यक्रमों हेतु आवेदन के लिये कृषक की खेती खतौनी, आधार कार्ड, बैंक पासबुक की छायाप्रति, दो फोटोग्राफ्स, कृषक का मो. नं. अनिवार्य है।

फलों की बागवानी, सब्जी मसाला तथा फलों एवं औषधीय खेती के चयनित कृषकों को विभाग में संचालित ''पर ड्राप मोर क्राप'' (माइकोइरीगेशन) योजनान्तर्गत भी शत–प्रतिशत लाभान्वित किया जायेगा।

डॉ0 बल्देव प्रसाद (जिला उद्यान अधिकारी, कानपुर देहात)